an>

title: Regarding the farmers right to decide the price of their yield.

श्री तामध्वज साहू (दुर्ग) : उपाध्यक्ष महोदय, भारतवÂर्ष को कृÂिष प्रधान देश कहा जाता है। देश के विकास का रास्ता कृषि से होकर आगे बढ़ता है। देश के अनेक उद्योग कृÂिष क्षेत्र के कारण चलते हैं। देश की करोड़ों जनता के लिए अन्न व उपयोगी सामग्री के उत्पादन का कार्य देश का किसान करता है।

किसान द्वारा उत्पादित फसलों के क्रय-विक्रय करने वाला व्यवसायी करोड़ों-अरबों रुपये कमाकर खुशहाल जीवन व्यतीत करता है, परंतु किसान भूखा मरता है और आत्महत्या करने पर विवश हो जाता है। इलाज कराने के लिए किसान के पास पैसा नहीं होता है। किसान जमीन बेचकर बच्चों की शादी करता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि किसान को उसकी उपज का सही मूल्य नहीं मिल पाता है।

इस देश में छोटी-सी सुई से लेकर बड़ी से बड़ी चीज जो व्यक्ति बनाता है, वह सामग्री मजदूरी व अन्य सभी खर्च, जो उत्पादन से जुड़ा होता है, उसे जोड़कर और अपना फायदा जोड़कर अपनी सामग्री का मूल्य खुद तय कर बाजार में बेचता है, परन्तु देश में किसानी का ही एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें किसान अपनी उपज का मूल्य स्वयं तय नहीं करता है। वह दूसरों के ऊपर आश्रित होता है, जिसका खामियाजा किसान व उसके पूरे परिवार को भुगतना पड़ता है। सरकार समर्थन मूल्य कभी 20 रुपए, कभी 50 रुपए बढ़ाती है, परंतु किसानी से संबंधित सामग्री जैसे बीज, खाद, दवाई, बिजली, कृषि उपकरण आदि की दर प्रतिवÂर्ाष कई गुणा बढ़ जाती है। लागत से बहुत कम मूल्य किसान को बाजार में मिलता है। किसान की हालत हमेशा खराब रहती है और वह हमेशा कर्ज में दबा रहता है तथा आत्महत्या करने पर विवश होता है।

अतः मैं सरकार से मांग करता हूं कि किसानों को भी अपनी प्रत्येक उपज का मूल्य निर्धारण करने का अधिकार प्रदान किया जाए।